

परमात्मा से मिलन के लिए...

आप कल्पना करो कि आप किसी मरुस्थल में हो और आपको प्यास लगी हो, और उस प्यास को बुझाने के लिए आपको कहीं दूर-दूर तक पानी का कोई स्रोत नज़र नहीं आ रहा है। उस समय पानी की एक बूंद भी आपके जीवन को बचाने हेतु बहुत आवश्यक हो जाती है। जिस प्रकार हम बेसुध होकर सिर्फ और सिर्फ पानी की तलाश करते हैं, हमें और कुछ नज़र नहीं आता, ठीक उसी प्रकार हमें परमात्मा के मिलन की प्यास हो तो वो क्यों नहीं मिलेगा! जैसे मछली जल के बिना नहीं रह सकती, पतंगा ज्योति में जले बिना नहीं रह सकता, वैसे ही प्रभु मिलन की प्यास वाले को प्रभु के बिना कुछ सूझेगा नहीं।

कैसे करें तैयारी?

मानव का मन वहां ही जायेगा जहां उसे कुछ न कुछ प्राप्ति होगी। इसके लिए हमें एक बहुत बड़ा उद्देश्य चाहिए, बहुत बड़ी प्राप्ति चाहिए। यदि मुझे पाँच विकारों पर विजय प्राप्त करनी है तो मुझे योग लगाना है,

तो धर्मराज पुरी में दण्ड भोगना पड़ेगा और कि निकट भविष्य में कलियुगी सृष्टि का महा विनाश आने ही वाला है जिसके लिये ही ये विनाश की सामग्री यानि बॉम्ब आदि बन चुके हैं तो उसके मन की चंचलता रुक जायेगी और उसका मन प्रभु प्रीति में एकाग्र

सागर तैर कर पार होने के लिए एकमात्र नाव है और कि अब आने वाले महाविनाश के प्रायः सब-कुछ भस्मीभूत तो होना ही है, और यह कि मैं तो एक आत्मा हूँ, देह तो पंच महाभूत का है, तो उसका मन प्रभु पर अवश्य ही केन्द्रित हो जायेगा। संसार में पुत्र पिता से अटखेलियाँ करता है, पिता अपने पुत्र से हुज्जत करता है, पत्नी पति को अपना जीवन दे देती है - ये सभी कुछ निश्चय के आधार पर तो हो रहा है।

अपनी महिमा स्वयं करें

जब किसी मनुष्य की महिमा हो रही होती है तब उसका मन बड़ा प्रसन्न होता है, गोया महिमा सुनने में मस्त हो जाता है। कोई व्यक्ति दुःखी या दरिद्र होता है तो उसका ध्यान अपनी दयनीय अवस्था पर बारंबार जाता है। अब यदि मनुष्य को यह याद रहे कि - 'मैं तो पहले सतयुगी, पावन, स्वर्गिक सृष्टि में देवता था' और दूसरी ओर यह भी समझ में आ जाये कि उसकी तुलना में तो आज मेरी दयनीय अवस्था है, ऐसा करने से वो शिखर पर चढ़ सकता है।

निद्रा एक अवचेतन योग की अवस्था है

निद्रा में तो चित्त की वृत्तियों का निरोध होता ही है। जब मनुष्य का मन इधर-उधर दौड़ता है, तब तो उसे नींद आती ही नहीं। नींद तभी आती है जब मन सभी ओर से हट जाता है। निद्रा में देह से आत्मा किञ्चित न्यारी भी हुई होती है। वास्तव में निद्रा करने का तरीका ही यह है कि देह तथा देह के सारे व्यवहार को भुला दिया जाये। ठीक इसी प्रकार योगाभ्यास में भी देह को भुलाना ही ईश्वरीय स्मृति में स्थित होने की सबसे बड़ी युक्ति है। जो लोग योग में मन एकाग्र नहीं कर पाते उनकी वृत्ति के विस्तार का मुख्य कारण ही यह है कि वे 'देह' के भान में टिके होते हैं। हरेक प्रकार की एकाग्रता में देह को भूलना ज़रूरी है। एकाग्र हुए मनुष्य को देह की सुध-बुध भूल जाती है और देह को भूलने वाले का मन एकाग्र हो जाता है। अतः परमपिता परमात्मा की स्मृति के लिये 'आत्मा निश्चय' (देह-विस्मृति) ही सबसे बड़ा उपाय है और आत्मा-स्थिति के लिए ईश्वरीय याद ही एकमात्र उपाय है।

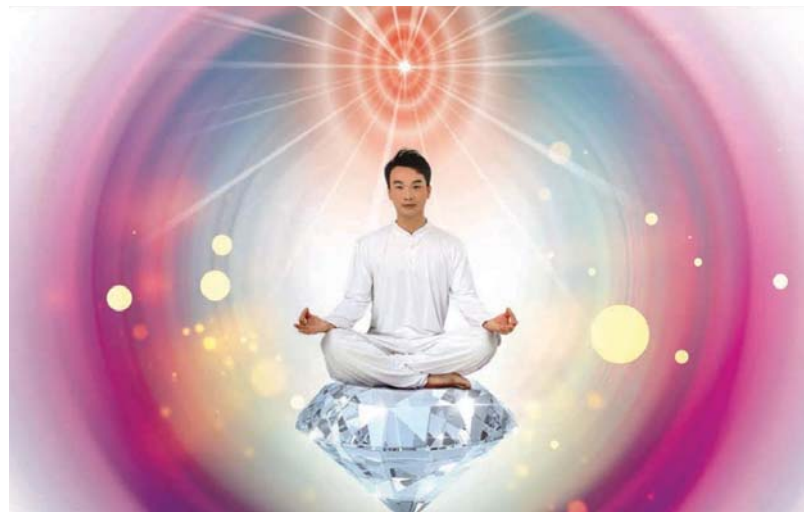
हो जायेगा। इससे हमारा यह भाव नहीं है कि हमें डर होना चाहिए परंतु हमारा तात्पर्य है कि हमें अपने बचाव के लिए तो पुरुषार्थ करना ही चाहिये।

अब तो मुक्ति मिलेगी ही मिलेगी

रोग भी मनुष्य का ध्यान अपनी ओर खिंचवाता है। दाँत में दर्द हो तो वह मन को अपनी ओर खींचता है, सिर में पीड़ा हो तो वह भी ध्यान को अपनी ओर खींचती है। उस अवस्था में मनुष्य को खाना-पीना भी अच्छा नहीं लगता, बस वह चाहता है कि किसी प्रकार उसका दर्द दूर हो। उसका ध्यान तो डॉक्टर की ओर ही लग जाता है या वह दवाई लेने का पुरुषार्थ करने में तत्पर हो जाता है। इसी तरह, यदि मनुष्य को यह बात अच्छी तरह समझ में आ जाये कि जन्म-जन्मान्तर से पाँच विकारों का महारोग मुझे लगा हुआ है; उसी के परिणामस्वरूप संसार की सभी पीड़ा, सभी दुःख हैं, तो वह उससे छूटने के लिए जो ज्ञान रूप परमौषधि है, उसे लेने में तत्पर हो जायेगा।

हमें खुद पर निश्चय करना होगा

यदि मनुष्य को यह दृढ़ विश्वास हो जाये कि परमपिता परमात्मा की स्मृति ही संसार



परमात्मा से मिलना है। रेलवे स्टेशन पर रात के बारह बजे भी चाय बेचने वाले - 'चाय गरम, चाय गरम' - ऐसी आवाज़ लगाते हैं। क्या उन्हें नींद नहीं आती? नींद तो हरेक को प्यारी है, परंतु प्राप्ति के कारण तथा रोटी न मिलने से जो भूख होती है उससे भी बचने के लिए वे रात्रि को नींद हराम करके भी चाय की केतली उठाकर चाय बेचने आते हैं। अतः यदि मनुष्य को यह याद रहे कि मुझे ईश्वरीय स्मृति द्वारा जन्म-जन्मान्तर के लिए स्वर्ग का अटल, अखण्ड, निर्विघ्न, अति सुखकारी राज्य-भाग्य मिलेगा तो उसकी याद का तो ताँता लग ही जायेगा।

अपने अंदर कुछ सकारात्मक भय पैदा करें

जब किसी देश पर आक्रमण हो रहा होता है तो लोगों का ध्यान खतरे की ओर होता है। जब किसी मनुष्य के सामने शेर आ जाये तो भय के मारे वह सब कुछ भूल जाता है, उसके सामने तो केवल शेर ही होता है; तत्क्षण उसे और कुछ दिखाई नहीं देता। ठीक इसी प्रकार, यदि मनुष्य को खयाल रहे कि यदि मैं अपने पूर्व जन्मों में किये विकर्मों को योगाग्नि से दग्ध नहीं करूंगा

सद्भावना संकल्प से...

परमार्थ निकेतन ऋषिकेश की प्रेरणा से ग्लोबल इंटरफेथ वाश अलायंस (जीवा) द्वारा यूनिसेफ के तकनीकी सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में पाँच धर्मों के प्रतिनिधि एक मंच पर थे।

सद्भावना संकल्प के अवसर पर जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद जी महाराज ने जल के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पानी सभी के जीवन की बुनियादी आवश्यकता है, लेकिन अभी धरती पर केवल 0.75 प्रतिशत पानी ही पीने योग्य

है। इसलिए जल का संरक्षण करना बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। प्रत्येक धर्म में पानी का किसी न किसी रूप में सम्मान किया जाता है। यह खूबसूरत क्षण है जब धर्म गुरु एक साथ यहाँ क्षिप्रा के तट पर सही दिशा में यात्रा के लिए एकत्रित हुए हैं।

प्रख्यात सुन्नी नेता इमाम उमर इलियासी, ऑल इंडिया इमाम ऑर्गनाइजेशन ने वायदा करते हुए कहा कि हम हमारे घरों, समाज में स्वास्थ्य, स्वच्छता और सफाई के महत्वपूर्ण संदेश में प्रचार-प्रसार के लिए देश भर के इमामों को एकजुट करेंगे। उन्होंने कहा कि 'स्वच्छ और स्वस्थ भारत बनाने तथा खुले में शौच

से मुक्ति के लिए सभी धर्मों को साथ आना चाहिए। स्वच्छता, पवित्रता और प्रकृति के सम्मान को प्रत्येक धर्म ने मान्यता दी है।

आज से हम इस स्वप्न को पूरा करने में जुट जाएं। देश को स्वच्छ बनाने का संकल्प हमारे दिल में होना चाहिए और हमारे कार्य इस संकल्प को हकीकत में बदलने वाले चाहिए। - शिया प्रमुख मौलाना डॉ. सईद कल्बे सादिक, संस्थापक, तौहिदुल मुस्लिम ट्रस्ट। हमारी अस्वच्छता प्रतिदिन अनेको मासूमों की मृत्यु का कारण बनती है। यह पीड़ा

अब खत्म होनी चाहिए। यह बदलाव लाना अब हम सभी की ज़िम्मेदारी है। - जैन समाज के प्रतिनिधि सम्माननीय आचार्य लोकेश मुनि।

प्रतिवर्ष जितने लोग सभी तरह की हिंसा से प्रभावित होते हैं, उन सबसे अधिक लोग अस्वच्छता के कारण कष्ट देखते हैं। हमें हमारे संकल्प को कार्य में परिणित करना होगा। - जीवा की महासचिव साध्वी भगवती सरस्वती। यूनिसेफ भारत की वाश प्रभाग की प्रमुख सुश्री सू कोट्स ने कहा कि असुरक्षित पेयजल, अस्वच्छता और सफाई का

अभाव डायरिया, सेप्सिस और निमोनिया जैसी बच्चों की बीमारियों का कारण है। ये तीन बीमारियाँ पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की सबसे बड़ी दुश्मन हैं। हमारा सहयोग समाज में सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता और सफाई का बढ़ावा देने में प्रेरक हो सकता है।

देश के प्रमुख धर्म-गुरुओं का बच्चों का जीवन बचाने के महत्वपूर्ण कार्य में एक साथ संकल्प में शामिल होने से देश में आज से एक नए अध्याय की शुरुआत हुई है। - यूनिसेफ भारत की संचार प्रमुख सुश्री केरोलीन डेन डल्क।



बाढ़-विहार। उपसेवाकेन्द्र के 10वें वार्षिकोत्सव पर 'परमात्म ज्ञान द्वारा विश्व परिवर्तन' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. संगीता। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. रविन्द्र, पूर्व मुख्य वार्ड पार्षद नीलम देवी एवं पूर्व मंत्री दयानन्द जी।



हाथरस-उ.प्र। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव समारोह में मंचासीन हैं पिछड़ा वर्ग आयोग के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति वी. ईश्वरैया, ब्र.कु. शान्ता व अन्य।



चित्तौड़गढ़-राज। रिजर्व पुलिस लाईन में 'तनाव मुक्त' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. हिमांशी, लाईन ऑफिसर भेरु गिरी, मेजर शकील मोहम्मद व पुलिसकर्मी।



अलीगढ़-विष्णुपुरी। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' अभियान के कार्यक्रम में संकल्प लेते हुए महिला प्रभाग की अध्यक्ष ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. शीला, अलीगढ़ मण्डल की महापौर शकुंतला भारती तथा अन्य।



देवघर-वैद्यनाथ(झारखण्ड)। नये गीतापाठशाला के उद्घाटन अवसर पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. बहन।